साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

[एड्स जागरूकता पर आधारित नाटक]

"बेदर्दी का जाने पीर पराई"

जनकदेव जनक

(प्रथम अंक)

प्रथम दृश्य

समय:शाम

स्थान: शहर के नुक्कड़ पर चाय की दुकान

पात्र: रमेश, पिटर, परवेज और बलिंदर (सभी युवक 20-22 आयु वर्ग) के युवक , जो चाय दुकान की बगल में खड़े है. चाय की चुस्की लेते हुए गपशप में व्यस्त है.)

पिटर: यार, इसी वक्त रोजाना सामने वाले घर से एक मस्त युवती निकलती है और बस स्टैंड की ओर जाती है, पता नहीं क्या चक्कर है?

रमेश : अरे दोस्त पिटर, तुम कब से जासूस हो गए! जब इतना जानते हो तो यह भी पता कर लो कि वह कहां जाती है? वह कहीं अपने प्रेमी से मिलने किसी दूर पार्क में तो नहीं जाती!

परवेज: अरे रमेश भाई, तुम्हें कैसे मालूम कि वह अपने प्रेमी से ही मिलने जाती है. हो सकता है कि वह कोई पार्ट टाइम जॉब करती

हो?

बलिंदर: अरे परवेज तुम बीच में टांग क्यों अड़ा दिया. रमेश को हमलोगों से ज्यादा अनुभव है. वह जो बोलता है उसमें हकीकत होती है. क्योंकि रमेश की एक खाशियत है कि वह उड़ती चिड़ियां का पर गिन ले.

पिटर: वाह यार, तूने तो मेरे मुंह की बात छीन ली. रमेश लड़कियों के पीछे नहीं खुद लड़कियां उसके पीछे भागती हैं. मैं जिस मस्त लड़की की बातें कर रहा हूं, वह लड़की रमेश से कई बार मिल चुकी है.

रमेश: हां यार, पिटर सही कह रहा है. वह बीए की एक छात्रा है. लेकिन है वह मजदूर वर्ग की. इसलिए पैसे के पीछे ज्यादा भागती है. शोषक वर्ग उसकी मजबूरी व जवानी का दोहन करता है.

पिटर: क्या नाम है उसका?

रमेश: उसके नामों की कोई गिनती नहीं है, लेकिन मैं उसका असली नाम जानता हूं, सीमा नाम है उसका.

बलिंदर: वाह, क्या नाम है- सीमा ! अंतहीन! क्या वाकई वह कभी अपनी सीमा में नहीं रहती! भई, हमें तो अपनी सीमा में रहना है. (एक नजर अपनी मोबाइल की घड़ी पर देखकर) बाप रे बाप पांच बज गए. मेरे घर पर मेरा ट्यूटर आ गया होगा. अब मैं चला.

(एक के बाद एक चारों साथी प्रस्थान कर जाते हैं.)

द्वितीय दृश्य

समय: सुबह

स्थान: सीमा का घर (बस्ती में एक झोपड़ी है)

पात्र- सीमा (18 वर्ष) , आरती (45), मनोज (50)

आरती: आज तुम्हारे पापा मुंबई से घर आ रहे है. थोड़ी देर पहले ही उनका फोन आया था. उनके खाने-पीने का इंतजाम करो बेटी, मैं बाहर उनके आने का इंतजार कर रही हूं.

सीमा: (खुश होते हुए) पापा आ रहे हैं मां, ये तो अच्छी बात है. पापा को घर आने दो, इसके बाद उन्हें बाहर नहीं जाने दूंगी. मुंबई जाने के बाद घर को भूल जाते हैं.

(तभी एक रिक्शा घर के सामने आकर रूकता है, दोनों मनोज का स्वागत करने पहुंती है, लेकिन आरती पति का बीमार चेहरा देखकर अवाक रह जाती है)

आरती: ओह, आप तो बीमार लग रहे है, क्या हालत बना रखी है? एकदम शरीर कंकाल बन गया है.... लगता है कभी अन्न-दाना ले भेंट नहीं हुआ क्या?..... सीमा बेटी,... तू सामान उतार कर घर में ले चल,... मैं तेरे बाप को संभाल कर ला रही हूं. (आरती मनोज का हाथ पकड़ कर अंदर लाती है और एक चौकी पर सुला देती है.)

मनोज: अरे आरती, तू खामोखाह चिंता करती है. थोड़ी हरारत है, दो चार दिनों में ठीक हो जाएगी.

सीमा: (सामान चौकी के नीचे रख कर सीमा अपने पापा को देखती है) पापा, आप अपने घर आ गए, अब सब कुछ ठीक हो जाएगा. आपको ज्यादा फिक्र करने की जरूरत नहीं है. अब आपको बाहर नहीं जाना है.

मनोज: ठीक है बेटी, नहीं जाऊंगा. एक गलास पानी देना और बैग से मेरी दवा भी लेती आना.(सीमा पानी व दवा लाकर देती है, मनोज दवा खाकर अपनी जेब से पचास रूपये का एक नोट निकालकर सीमा को देता है.) बेटी, जल्दी में कोई मिठाई नहीं ला सका, जा बाजार से मिठाई ला...(सीमा नोट लेकर बाजार के लिए प्रस्थान करती है)

आरती: आप कितने दिनों से बीमार हैं?

मनोज: 10-15 दिनों से...., डॉक्टर ने आराम करने को कहा है.

आरती: यह कौन सा रोग है जो आपको कंकाल बना दिया है.

मनोज: खून की जांच कराई थी, डॉक्टर ने कहा कि कोई बड़ा रोग है, जिसका कोई इलाज नहीं है. ये बातें सीमा बेटी को नहीं बताना....

आरती: (दीवार पर टंगे मां काली की तस्वीर को निहारते हुए) हे काली माई.... ये क्या सुन रही हूं..... दुनिया में ऐसे भी रोग हैं.... जिनका कोई इलाज नहीं, लेकिन तू तो जगत की माता है, ...तेरे रहते हम बेसहारा..... कैसे हो सकते हैं....

मनोज: ऊपर वाले पर भरोसा रखो आरती...वही कल्याण करेगा.

तृतीय दृश्य

स्थान: आरती की झोपड़ी

समय: सुबह

पात्र: आरती, दीनू काकी (60 वर्ष)

(एक साल बाद आरती का बीमार पति मनोज का निधन हो जाता

है. दाह संस्कार के बाद वह अपनी झोपड़ी में बैठी हुई आंसू बहा रही है. तभी पड़ोस की दीनू काकी का प्रवेश होता है)

आरती: अरे...रे.. दुनिया बनाने वाले, मैंने तेरा क्या बगाड़ा था कि माथे का सिंदूर पोछ दिया, जवान बेटी के माथे का आशीष छीन लिया.

दीनू: अरे बेटी शांत हो जा...,...शांत हो जा..., जाने वाले चले जाते और दुख भोगने के लिए पीछे परिवार को छोड़ जाते हैं.... अब हिम्मत से काम लो,... एक बेटी सीमा है ....जिसकी शादी का बोझ ....तेरे कमजोर कंधों पर है. धैर्य रखो, ईश्वर सब देखता है.

आरती:(आंशू पोछते हुए) कैसे चुप रहे काकी, जिनका सहारा था अब वही नहीं रहा, आस की डोर टूट गई तो कौन मदद करेगा? बस्ती के लोगों के सहयोग से किसी तरह उनका अंतिम क्रिया किया. लेकिन जीने के लिए कोई आलंब तो चाहिए न!

दीनू: अरे बेटी, बहुत मदद मिलेगी, पंचायत के मुखिया और ब्लॉक में बीडीओ साहेब हैं न, पलक झपकते सारा काम हो जाएगा. लाल कार्ड, विधवा पेंशन, प्रधानमंत्री आवास, सीमा की फ्री पढ़ाई आदि की व्यवस्था हो जाएगी. तुम को जरूरत के अनुसार आवेदन लेकर मुखिया के पास जाना है.

आरती: ठीक है काकी, इस काम में आपका सहयोग चाहिए.

दीनू: अरे बेटी, चिंता मत करो. शुभ काम में देर क्या. चलो, मेरे साथ.

चतुर्थ दृश्य

समय: दिन के 10 बजे

स्थान: मुखिया का दलान

पात्र-आरती, मुखिया पति जीवन (50 वर्ष) , मुंशी (65 वर्ष)

(मुखिया रीता देवी घर का काम करती है. जबकि उसका पति जीवन मुखिया का काम देखता है. आरती हाथ में आवेदन लेकर उसके पास खड़ी है.)

जीवन: (आरती को नीचे से ऊपर तक घूरते हुए) लाओ, अपना आवेदन दो, (अपने हाथ में आवेदन लेकर पढ़ता है) ओह, तुम्हारा पति नहीं है, कोई बात नहीं, हम हैं न, हर तरह से मदद मिलेगी. मुंशी जी, इसके आवेदन को आज ही बीडीओ साहब के पास भेज दीजिएगा. इनका काम हर हाल में हो जाना चाहिए.

मुंशी: हुजूर, एक दम हो जाएगा. (आवेदन लेकर फाइल में रखते हुए) आपका काम एक माह बाद हो जायेगा. मिठाइयां खिलाना नहीं भूलिएगा (हीहीहीही....हंसते हुए मुंशी ने आरती के चेहरे को निहारा. पहले अपनी आंखों से चश्मा नीचे नाक तक लाया, फिर अपने होठों पर जुबान फेरा, लगा जैसे आरती कोई मिठाई हो)

आरती: जी, बहुत अच्छा.

मुंशी: अरे आरती, सुना है तुम्हारी लड़की बेरोजगार है?

आरती: नहीं मुंशी जी, वह एक जगह प्राइवेट काम करती है.

मुंशी: कोई बात नहीं, लेकिन यहां आने जाने से पहचान बढ़ेगी. बेटी को लाभ ही मिलेगा. कभी कभार यहां भी लाया करो, ठीक है ठीक

जाओ.

(द्वितीय अंक)

पंचम दृश्य

स्थान- आरती की झोपड़ी

समय: दोपहर दिन

पात्र :आरती, दीनू काकी

(आरती चिंतित मुद्रा में गाल पर हाथ रखे हुए बैठी है, तभी दीनू काकी का आगमन होता है)

दीनू: क्या सोच रही हो, आरती बेटी, सुना है कि तेरा काम मुखिया ने कर दिया है तो फिर देर किस बात की है?

आरती: क्या बताऊ काकी, विधवा पेंशन, लाल कार्ड और प्रधानमंत्री आवास के लिए तन और मन को जलाना पड़ा है तब जाकर मेरा आवेदन पास हुआ. मुखिया से लेकर बीडीओ ऑफिस तक के अधिकारी व कर्मचारी सभी जिस्म और धन के भूखे है. मुझ जैसी अबला को उन्होंने लूटा है. भगवान उन्हें माफ नहीं करेगा. इस विधवा की आह उनके शरीर को जलाकर राख कर देगी. यह मेरा श्राप है. नीचे से ऊपर तक भ्रष्ट है,किससे करूं फरियाद काकी !

दीनू: आरती सचमुच तेरे साथ अन्याय हुआ है. भगवान इसका इंसाफ करेगा. अच्छा, अब चलती हूं. (दीनू काकी का प्रस्थान)

षष्टम दृश्य

समय: शाम 7 बजे

स्थान: सड़क

पात्र: रमेश व सीमा

(रमेश अपनी बाइक से ट्यूशन पढ़ने जा रहा है तभी सड़क पर खड़ी सीमा लिफ्ट मांग कर बैठती है)

सीमा: हाय रमेश, मुझे इतना मत तड़पाओ..., तुम से मिलने के लिए मुझे घंटों परेशान होना पड़ता है. तुम कभी मेरी भी तो सुनो.

रमेश: (बाइक की रफ्तार बढ़ाता हुआ) सीमा, अगर तुम से प्रीत नहीं होती तो बाइक यूंही नहीं रोकता, मैं तुम्हारी बेबसी को समझता हूं, लेकिन मैं भी तो आजाद नहीं हूं. मेरे पिता मेरी निगरानी करते रहते हैं. जैसे मैं कब ट्यूशन गया, कब वहां से लौट आदि. ये बातें वे मेरे ट्यूटर से पूछते-रहते हैं. लेट होने पर मां की डांट अलग सुननी पड़ती हैं.

सीमा: अच्छा,अच्छा, बहाना बनाना तो कोई तुमसे सीखे, अब बाइक रोको, जंगल का खंडहर हमारा इंतजार कर रहा है. दिल में लगी आग यूंही धधकती रहेगी या उसे.....

रमेश: सीमा, किसी ने सच ही कहा है कि दिल की लगी क्या है कभी दिल लगा के देख....., तू जितना बेकरार है उससे कम बेकरारी तेरा यार नहीं है क्या?

(बाइक रोकने के बाद दोनों एक दूसरे का हाथ थामे अंधेरे में गुम हो जाते हैं. थोड़ी देर बाद किसी खंडहरनुमा मकान के बाहर गपशप

करते दिखाई पड़ते है, सीमा अपने घर की कहानी बयां करती है)
सीमा: गरीबों की दुनिया बड़ी निराली होती है. घर में सही कमाने वाला न हो तो घर का एक-एक सदस्य भिखारी हो जाता है. आर्थिक तंगी कभी घर से बाहर नहीं होती. अभाव के कारण हमेशा कोई न कोई बीमार ही रहता है. अर्थाभाव में किसी तरह ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर सकी. नौकरी के लिए चक्कर लगा रही हूं, किंतु कहीं अच्छी नौकरी नहीं मिली. प्राइवेट जॉब मिला भी था तो वहां पैसे कम खटाली 24 घंटे थी. उसी दरम्यान मेरी मुलाकात क्लासमेट रिया से हुई. जिसका हाई फाई स्टाइल ने मुझे काफी आकर्षित किया. अब लगता है मैं उसकी चंगुल में फंस गई हूं. मात्र उसके इशारे का खिलौना हूं. कमाई के सारे पैसे वह ऐंठ लेती है. पता नहीं उस दलदल से कैसे निकलूं?
रमेश: वाकई, रिया जैसी चुड़ैल से दामन छुड़ाना आसान नहीं. फिर भी उससे अलग रहने की कोशिश तो कर ही सकती हो.
सीमा: बिल्कुल ठीक बोलते हो. लेकिन उसके पास मेरी कुछ प्राइवेट तसवीरे हैं, जिन्हें दिखाकर नेट पर वायरल करने की धमकी देती है.
रमेश: क्या समाजसेवी डॉ खुराना हमें मदद कर पाएंगे?
सीमा: मुझे उम्मीद नहीं. खैर, अब यहां से चलो, अंधेरा गहराने लगा है. (दोनों का प्रस्थान)

सप्तम दृश्य

समय: शाम

स्थान: चौक के किनारे चाय दुकान

पात्र: चाय दुकानदार रामू (45 वर्ष), ट्रक चालक(35 वर्ष), खलासी (20 वर्ष)

(उसी समय चाय दुकान के सामने एक ट्रक आकर रूकती है, ट्रक से चालक खलासी उतरकर चाय दुकान पर आते हैं.)

चालक: भैया, दो गलास चाय मलाई मारकर देना.(दोनों खाली बेंच पर बैठ जाते है.)

चायवाला: (दो गलास चाय देने के बाद पूछता है) ड्राइवर साहेब, और कोई सेवा हो तो बेहिचक बोलिएगा. बंदा सेवा के लिए तैयार है.

चालक: बिस्कीपाड़ा किधर है?

चायवाला: ड्राइवर साहेब, मैं आपकी बातें समझ गया, लेकिन इधर न तो कोई बिस्कीपाड़ा है न कोई चकला. हां पास में एक कॉल गर्ल रहती है जो आपकी तबीयत खुश कर सकती है, लेकिन....

चालक: अरे, इसमें लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, ये सौ रुपये तुम रखो और रात जब ढलने लगे तो ट्रक के पास भेज देना. अरे हां, जब शबाब का जोगाड़ हो गया तो शराब की व्यवस्था भी होनी चाहिए. क्या समझे?

चायवाला: (नोट पकड़ते ही चायवाले का चेहरा चमक उठा, उसने नोट अपनी जेब में डाला और कहा) ड्राइवर साहेब, आपकी बात साढ़े सोले आने ठीक है. बोलिए, देशी चाहिए कि बिदेशी?

चालक: भैया हम तो देहाती आदमी ठहरे, हमें तो देशी ही ठीक लगता है. लेकिन देसी के साथ चूजा फ्राई जरूरी है.
चायवाला: वो....तो सब ठीक है.... ड्राइवर साहेब, लेकिन मात्र सौ रुपये की क्या बिसात !, सुविधा चाहिए तो मुट्ठी खोलनी होगी.
चालक: मुट्ठी की चिंता मत करो, पांच सौ रुपये का नोट पकड़ो..., हां, याद रहे मेरा माल बिल्कुल चोखा होना चाहिए, डर्टी माल मुझे पसंद नहीं.....(तभी बीच में खलासी बोल पड़ता है)
खलासी: उस्ताद, गुटका की पुड़िया चाहिए, चाय पीने के बाद मुंह फीका लग रहा है.....(तभी ड्राइवर खलासी को डांटा)
चालक: मूर्ख, जिंदगी भर मूर्ख ही रहता है, सीधी सी बात है कि जब बड़े आपस की बात बतिया रहे हो तो बीच में टोकना नहीं चाहिए. अरे गुटका लेना है तो ले लो, फिजुल की बातों के लिए मेरा भेजा मत खराब करो. अरे कमबख्त, गिद्ध पक्षी की तरह डैना फैलाये क्यों खड़ा है, जाकर ट्रक का चक्का रड मारकर देख तो लो कि कहीं हवा कम तो नहीं है?
खलासी: उस्ताद, आपका आदेश सर आंखों पर, आपही तो मेरे माई बाप है, आप आराम करें, चुटकी बजाते सारा काम कर लूंगा. (खलासी ट्रक की सीट के नीचे से रड निकाला और मस्ती में ...'चली आना पान की दुकान पर गीत गाते हुए टायर चेक करने लगा.)
चायवाला: (अपनी मोबाइल पर रिया को फोन नंबर मिलाता है और दोनों से दूर हटकर धीमी स्वर में बोलता है) आज रात मीना को नहीं सीमा को भेज देना रिया मैडम, हां हां, मालदार पार्टी है....,गले

में सोने की चेन...,अंगुलियों में अंगूठी और उसका पर्स भी भारी है...ठीक है ठीक है,....पुलिस की चिंता नहीं करनी है...उसे तो केवल बिटामिन एम की गोली चाहिए....आप निफिकिर रहे...ओके...ओके ....(फिर वह ट्रक चालक के पास आता है)

चायवाला: आपका काम हो गया.

चालक: अच्छा भाई, कल सुबह फिर भेंट होगी, चलता हूं(चालक खलासी का प्रस्थान)

अष्टम दृश्य

समय : प्रात: 8 बजे

स्थान : सेंट्रल होस्पीटल

पात्र : डॉ खुराना (50 वर्ष), मुखिया पति जीवन, मुंशी व 50-55 अन्य व्यक्ति

(मुखिया के साथ उसकी पंचायत के 35 अन्य व्यक्ति भी एचआइवी जांच कराने के बाद रिपोर्ट के इंतजार में खड़े है)

डॉ.खुराना: मुखिया पति जीवन के साथ 35 लोगों में एचआइवी पाया गया है. सभी लोगों को एक साथ एड्स होना, वह भी एक पंचायत का, बड़ी खबर है. खैर, जो हुआ सो हुआ.आपलोगों का इलाज होगा. आप लोग अभी बाहर जाये. आवश्यकता के अनुसार आप लोगों को एक एक कर बुलाया जाएगा.

(सभी डॉक्टर चैंबर से बाहर निकल जाते है. सबके चेहरे पर पीलापन है, सभी एक दूसरे से आंखें चुरा रहे है, लगता है कि उन्हें अपना अपराधबोध हो गया है.)

जीवन: (रोनी सूरत बनाकर) मुंशी जी ये तो बहुत ही बुरा हुआ, किस मुंह से हम लोग घर जाएंगे और अपने परिवार व बच्चों को क्या बताएंगे? यहीं चिंता मुझे खाये जा रही है.

मुंशी जी: (गंभीर मुद्रा में) अरे मुखिया जी, आपकी चिंता वाजिब है, लेकिन ये सब हुआ कैसे? मुझे लगता है आरती के साथ जबरदस्ती करना सबको विधवा का श्राप लग गया है.

जीवन: विधवा का श्राप नहीं, मुंशी जी. आरती का पति हालही में मरा है, हो सकता हो उसे एड्स की बीमारी रही हो...अब आया समझ में....

मुंशी: अब चेतने से क्या होगा....,(दुखीत होता हुआ) पश्चताप करने के क्या फायदे..., मरना तो सबको एक साथ है!.... सामाजिक बदनामी अलग से..... (आंखों का आंसू पोछता हुआ) आप लोगों की बुरी संगत ने मेरा बुढ़ापा खराब कर दिया..... आपकी चाकरी में नहीं रहता तो..... बुढ़ापा राम नाम कहते गुजर जाता....(दोनों हाथ जोड़कर) हे, शिव शंभु कैलाशपति....तू सबकी बिगड़ी बनाता है...कल्याण करो, प्रभो.....कल्याण करो....कल्यणा (सभी प्रलाप करते मुंशी को देखते हैं. मरीजों को अपने किये पर पछतावा होता है,)

(तृतीय अंक)

नवम दृश्य

समय: गर्मी के मौसम की दोपहर

स्थान : चौराहे की दीवारों पर एड्स उन्मूलन के पोस्टर लगे हैं

पात्र : शिक्षक (50), रमेश, पिटर, बलिंदर, परवेज, डॉक्टर

(एड्स जागरूकता दिवस पर स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता और पदाधिकारी एड्स का सिंबल दर्शकों को दिखाते है और बचाव के बारे में बताते हैं.)

डॉ.खुराना: एड्स जानलेवा बीमारी है. इसकी रोकथाम के लिए केंद्र व राज्य सरकारें सजग हैं. स्कूल से लेकर कॉलेज के विद्यार्थियों तक को एड्स संबंधी जानकारी दी जा रही है. ताकि उनमें जागरूकता आये और इस असाध्य रोग से लड़ सके. यौन संबंध बनाने से पूर्व कंडोम का इस्तेमाल करें. किसी बीमार को खून देने से पूर्व अपना रक्त जांच करा लें. अगर कोई एड्स पीड़ित है तो उसे घृणा की दृष्टि से न देखें. वैसे रोगियों को अपना प्यार व स्नेह दें, ताकि उसे सामाजिक उपेक्षा महसूस न हो सके.

शिक्षक आरएन महतो: डॉ खुराना ने एड्स से पूर्व बचाव के लिए क्या क्या करना चाहिए, उस पर प्रकाश डाला. उसी कड़ी में जोड़ना चाहूंगा कि साल में एक बार हर किसी को अपना एचआईवी जांच करा लेनी चाहिए. ताकि इस खतरनाक बीमार से दूर रहा जा सके. युवा वर्ग में 18 से 35 का उम्र ऐसा है, जहां सैक्स की चाहत अधिक रहती है. किसी किसी को एक से अधिक व्यक्तियों से संबंध रहता है. सतर्कता व सावधानी नहीं बरतने पर एड्स को आमंत्रण करना है. इसलिए कॉल गर्ल, वेश्या और बाजारू औरतों से सावधान रहने की जरूरत है. आम आदमी दूसरे की खामियों और अपनी कमियों को छुपाने में लगे रहते हैं.

(भाषण सुनने के दौरान रमेश यकायक नीचे गिर कर बेहोश हो गया. तभी पास खड़ा एक व्यक्ति अपने मिनरल वाटर की बोतल से अपनी तलहथी में पानी लेकर उसके चेहरे पर छींटा मारा. रमेश के साथी परवेज, बलिंदर, पिटर आदि वहां पहुंच कर लोगों को हटाए और उसे हिलाने डुलाने लगे, तभी रमेश होश में आ गया)

परवेज: कैसी तबीयत है रमेश?

रमेश: पता नहीं, क्यों चक्कर आ गया था ! लगता है ज्यादा थकान हो गई है, शायद आराम की जरूरत है.

डॉ खुराना: (रमेश का पल्स आदि जांच करते हुए) हां, रमेश ! तुम्हें आराम की जरूरत है. फिलहाल मानसिक व शारीरिक काम छोड़ दो. वैसे तुम पहले से कुछ ज्यादा ही कमजोर दिखायी पड़ रहे हो.

पिटर: हां सर, आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं. मैं रमेश को उसके घर छोड़ आता हूं, तुम्हारा क्या विचार है बलिंदर भाई.

बलिंदर: हां पिटर, तुम्हारा व डॉक्टर साहब का कहना सही है. लगता है प्रभात फेरी के दौरान रमेश कुछ ज्यादा ही थक गया. हम देख रहे हैं कि रमेश के अंदर की चंचलता खत्म सी होती जा रही है और वह अधिकांश समय सुस्त पड़ा रहता है. कई बार तो मैंने उसे ख्यालों में खोया हुआ देखा है.

पिटर: अरे यार अब रहने भी दो अपना भाषण, देखो परवेज भाई रिक्शा लेकर आ गया. इधर रिक्शा लाओ.

(रमेश रिक्शा पर बैठते हुए बोला)

बलिंदर: आई एम सॉरी रमेश!

रमेश: कोई बात नहीं बलिंदर भाई, तुम्हारी यही बेबाकी मुझे अच्छी लगती है. अरे पिटर भाई, मैं अकेला घर चला जाउंगा, क्यों मुझे अभी से ही बीमार बना रहे हो. जाओ, एड्स जागरूकता अभियान को सफल बनाओ....

पिटर: अरे चिंता क्यों करते हो, अभियान की सफलता के लिए परवेज और बलिंदर भाई हैं न. चलो, रिक्शा आगे बढ़ाओ.

(रिक्शा जैसे ही आगे बढ़ता है, पीछे से शिक्षक मेहता दौड़ते हुए आते हैं और रमेश के कंधे पर हाथ रखकर थपथपाते हैं.)

शिक्षक: रमेश परेशान होने की जरूरत नहीं है, घर जाकर आराम करो. हो सके तो एक गलास गर्म दूध जरूर पी लेना, शरीर में ताजगी आ जाएगी. मौका निकालकर फिर मिलूंगा.

रमेश: थैक्स सर!

(रिक्शा के साथ पिटर व रमेश का प्रस्थान)

दशम दृश्य

स्थान: शहर का एक अस्पताल

समय: दोपहर

पात्र: सीमा, आरती व चायवाला रामू ,डॉ आशा (45 वर्ष)

(बीमार सीमा को रिक्शा पर बैठाकर उसकी मां आरती व चाय दुकानदार रामू अस्पताल लाते हैं)

आरती: अरे रमुआ, तुम सीमा को समझाते क्यों नहीं कि वह शादी-विवाह करके अपना घर बसा ले. मै तो दो दिनों की मेहमान हूं. कब भगवान के पास चली जाउंगी, पता नहीं? लेकिन मरने से पहले

उसका हाथ तो पीला कर पाती ! यहीं एक कामना मन में रह गई है.

रामू: अरे चाची, अभी फिजूल की बातें न करो, मरे आपके दुश्मन, रही बात शादी की तो उसने अपना दूल्हा खुद देख लिया है, वह जल्द ही तुम्हारी मुराद पूरी करने वाली है.

सीमा: (कराहते हुए) अरे मां..., एक घूंट पानी तो पिलाना..., कंठ सूखा जा रहा है.....मारे दर्द के कमर दुख रहा है.... लगता है ....ज्वर से शरीर जल रहा है...अरे सूखे कंठ को थोड़ा पानी दो न....(आरती बोतल का पानी उसे पिलाती है)

आरती: बहुत काम कर लिया बेटी, जल्द ठीक हो जाओ. अब तुझे ऑफिस जाने नहीं दूंगी. मुझे नहीं चाहिए धन दौलत, घर आंगन की सफाई कर भले अपना पेट पोस लूंगी. लेकिन अब जवान बेटी को घर से बाहर नहीं निकलने दूंगी.

सीमा: हां, हां...., तू ठीक कह रही है मां...., अब घर से कभी बाहर नहीं निकलूंगी...., दुनिया बड़ी जालिम है रे...(सीमा रोने लगती है.)

रामू: अरे चाची, यह समय शिकवा शिकायत का नहीं है. बीमार सीमा को सहानुभूति की जरूरत है.

आरती: अरे रामू , तू क्या जाने जवान बेटी की मां के दिल का दर्द. जब बेटी का पांव घर से बाहर निकलता है तो मां का दिल धकधक करने लगता है. अब अपनी बेटी को घर से नहीं निकलने दूंगी...(इतना बोलकर वह रोने लगती है, रामू उसे धैर्य बंधाता है)

रामू: चुप रहो चाची, अस्पताल में सीमा को लेकर चलो,

(रिक्शा अस्पताल के गेट पर रूक जाता है. दोनों सीमा को लेकर एड्स सेंटर में पहुंचते है. वहां डॉक्ट आशा बीमार सीमा की चेकअप करती है. साथ ही एचआइवी की आशंका प्रकट करती है. सीमा के ब्लड जांच में एचआइवी संक्रमण बताया गया है, जिसे सुनकर सीमा की आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है.

सीमा: डॉक्टर साहिबा, मेरी मां को इस बीमारी की जानकारी नहीं होनी चाहिए, नहीं तो वह जीते जी मर जाएगी...(इतना बोलते ही उसकी आबाज भर्रा जाती है)

डॉक्टर: सीमा, घबराओ नहीं, एचआइवी का संक्रमण अभी फर्स्ट स्टेज पर है, तुम नाहक परेशान होती हो, ठीक हो जाओगी, आज कल तो सेक्स वर्क्स भी एचआइवी के संक्रमण से बचने के उपाय करती हैं, तुम से ऐसी गलती कैसे हो गई? खैर, जाने दो. जो हुआ सो हुआ. कल रात ही दूसरे वार्ड में भर्ती एक ट्रक चालक की मौत हो गई. उसके साथ आया खलासी भी गायब है. मृतक के परिजनों को कुछ अता-पता नहीं चल पा रहा है.

सीमा: डॉक्टर साहिबा, क्या मैं उस मरे हुए ट्रक ड्राइवर का चेहरा देख सकती हूं.

डॉक्टर: जरूर देख सकती हो.शायद उसे पहचान सको.

(सीमा, आरती व रामू दूसरे वार्ड में मृत ट्रक चालक को देखने के लिए प्रस्थान करते है)

एकादश दृश्य

स्थान: शहर का एक अस्पताल

समय: दोपहर

पात्र: सीमा, आरती व रामू

(बीमार रमेश डॉ दिनेश वर्मा (55 वर्ष) के पास बैठा है. डॉ वर्मा रमेश की जांच पड़ताल करते, तभी रमेश की मां शारदा(60 वर्ष) बोल पड़ती है)

शारदा: डॉक्टर साहब, मेरे पुत्र का इलाज बढ़िया से करना, यहीं मेरी आंखों का तारा है. इसके बीमार पड़ते ही पूरा घर बीमार हो गया है. पता नहीं एक माह से बेटे के शरीर का वजन बहुत कम हो गया है और हमेशा कमजोरी फिल करता है.

डॉक्टर: निराश होने की जरूरत नहीं है. जांच के बाद ही पता चलेगा कि बीमारी क्या है. लक्ष्ण के अनुरूप एचआइवी जांच लिख देता हूं. जांच के बाद फिर से इलाज शुरू होगा.

रमेश: (घबराकर) एचआइवी की जांच ? ...हे ईश्वर,... मुझे क्या हो गया.... नहीं डॉक्टर साहब,.... मुझे ...एचआइवी नहीं ...हो सकता, ...आप डराने के लिए टेस्ट क्यों लिख रहे हैं. ...

शारदा: (बीच में बोलते हुए) अरे डॉक्टर बाबू, मेरे लाल को कोई बड़ा रोग हो गया है क्या, जिसका नाम सुनते ही उसका चेहरा पीला पड़ गया! (शारदा रमेश का कंधा पकड़ते हुए) नहीं, बेटा तुम्हें कुछ नहीं होगा, अभी तेरी मां जिंदा है. जांच कराने में कोई हर्ज नहीं, जांच के बाद ही तो मर्ज का पता चलेगा

द्वादश दृश्य

स्थान: शहर का एक अस्पताल

समय: शाम का वक्त

पात्र: रमेश, सीमा,

(एचआइवी जांच के बाद रमेश एड्स सेंटर के वार्ड में भर्ती होता है, जहां पहले से बीमार सीमा इलाजरत है. दोनों का बेड आजू -बाजू है. रमेश की नजर सीमा पर पड़ती है)

रमेश: अरे सीमा, तुम यहां? क्या हुआ तुझे!

सीमा: वहीं हुआ है जो इस सेंटर में इलाज कराने वालों का होता है. ...ओह, हाय री, नियती...! (लंबी सांस लेते हुए बोली) लगता है किस्मत ने एक बार फिर हम दोनों को मिला दिया.

रमेश: हां, सीमा सच कह रही हो, इस जानलेवा बीमारी का मैं भी एक मेहमान हूं. मौत के मुंह में यह जिंगगी तड़प-तड़प कर यूंही खत्म हो जाएगी...., हम घुट-घुट कर मर जाएंगे...(रमेश की आंखें भर आती हैं)

सीमा: नहीं-नहीं रमेश, तुम गलत सोच रहे हो, जीवन के बचे हुए पल काफी कीमती हैं, उन्हें यूंही जाया नहीं करना है. एक एक क्षण का उपयोग हम पराये दर्द को बांटने में निछावर करेंगे...क्या समझे, यह रोने का वक्त नहीं ...कुछ करने का वक्त है. हम बुजदिल नहीं है कि एड्स के भय से मर जाएंगे. मरने से पूर्व अपने देश व विदेशों में रहने वाले करोड़ों मरीजों को एक नया संदेश देकर जाएंगे!

रमेश: वाह! सीमा वाह, तुम्हारे जैसा जिगर वाला शायद ही कोई

लड़की हो, जब हौसला बुलंद है तो हम एक साथ मिलकर एड्स की हवा निकाल देंगे, देखो, डॉक्टर खुराना, पिटर, बलिंदर,,परवेज ,रामू आदि लोग इधर ही आ रहे है.

डॉ खुराना: वेलकॉम सीमा -रमेश, एड्स जागरूकता मिशन कल से शुरू हो रहा है, उसके मुख्य अतिथि आप दोनों होंगे. अच्छा, गुड लक, फिर कल मिलेंगे!

पटाक्षेप

****

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें